वानिकी समाचार

वन विभाग राजस्थान का मासिक पत्र

वर्ष : 26 अंक : 5 मई-2009

पृथ्वी को यदि बचाना है।
तो पेड़ अधिक लगाना है।।

पेड़ों का सुरक्षा कवच

❑ अक्षय सिंह

घर की फिजा और आसपास का वातावरण हरा-भरा रखिए, यह सलाह किसी को दो, तो वह तुरंत पूछ बैठते हैं कि कौन से पेड़-पौधे लगाएं? पाम, मनीप्लांट आदि तो पौधे हैं, पेड़ कौन-कौन से चुनें?

चलिए, इनकी ही चर्चा करते हैं। प्रकृति ने हमं पेड़-पौधों की अमूल्य सौगात दी है, जिनका सही चुनाव कर सही स्थान पर लगाया जाए, तो बाहरी वातावरण के साथ-साथ घर की अंदरूनी फिजाएं भी खुशनुमा बनी रहेंगी। आपको सिर्फ कुछ विशेष प्रजाति के पौधों को अपने घर के बाहर कम्पाउंड, बगीचे में लगाना है और उनकी समुचित देखभाल करनी है। पेड़ों से निकलने वाली स्वच्छ और स्वस्थ ऑक्सीजन आपके साथ आपके पूरे परिवार को संपूर्ण स्वास्थ्य देगी।

घर में बड़े, छायादार और कार्बनडाइऑक्साइड को अवशोषित करने वाले पेड़ लगाने से तेजी से प्रदूषित हो रहे वातावरण की समस्या को काफी हद तक हल किया जा सकता है। लेकिन इसके पहले अपनी घर की स्थिति को जांचना जरूरी है। घर की दिशा कैसी है, घर सड़क किनारे है या कॉलोनी में, पेड़ों के विकास के लिए कितनी जगह है, आदि बातें आपको पहले देखनी होगी। इसके बाद ही आप कुछ विशेष तरह के पेड़ लगाएंगे, तो भरपूर फायदा मिलेगा।

घर के लिए विशेष पेड़

यदि आपका घर कॉलोनी या सड़क के आसपास हो तो, अमलतास और गुलमोहर के पेड़ लगाने चाहिए, क्योंकि इनकी ऊंचाई से बिजली की हाईटेंशन लाइनों व टेलीफोन के तारों को परेशानी नहीं होती। इनकी जड़ें भी आसपास के ड्रेनेज और दीवारों को क्षति नहीं पहुंचाती। यह दोनों ही पेड़ उचित मात्रा में कार्बनडाइऑक्साइड अवशोषित करने के साथ-साथ भरपूर ऑक्सीजन उपलब्ध कराते हैं।

घर के बाहर उचित बाउंड्री हो, तो नीम केशिया, श्यामा,शहतूत, अशोक और कलमी आम की किस्मों को रोपण किया जा सकता है। यह पेड़ न केवल फलदार होते हैं, बल्कि इन पेड़ों से गर्मी के दिनों में घर का अंदरूनी तापमान भी सामान्य बना रहता है और घर प्राकृतिक रूप से ठंडा बना रहता है। इसके साथ ही घर में नीम का पेड़ लगाना, स्वास्थ्य की दृष्टि से भी उत्तम होता है। यूं तो धार्मिक मान्यता के अनुसार घर में बरगद व पीपल के पेड़ नहीं लगाए जाते हैं लेकिन यह पेड़ भी प्रचुर मात्रा में कार्बन डाई ऑक्साइड अवशोषित कर ऑक्सीजन उत्सर्जित करते हैं। इन्हें बाहर सड़क पर सार्वजनिक उद्यानों, देवालयों के समीप लगाने की इजाजत ले लें।

घर के बाहरी हिस्से में आप बबूल भी लगा सकती हैं बबूल की जड़ें काफी मजबूत होती है। इसलिए आप इन्हें ऐसी जगहों पर लगा सकती हैं, जहां भू-क्षरण की स्थिति बनती है। बबूल की जड़ें मिट्टी और जमीन पर अपनी मजबूत पकड़ बनाती हैं, जिससे भू-क्षरण नहीं होता। पर्यावरण को शुद्ध बनाने में भी बबूल की अहम भूमिका है।

यदि आपके घर में घने पेड़ों के लिए समुचित स्थान है और सुरक्षा पूरी तरह से उपलब्ध है, तो जामुन, अमरूद जैसे पेड़ भी लगाए जा सकते हैं।

शहरी व्यवस्था में पेड़

तेजी से बढ़ रहे शहरीकरण ने पेड़-पौधों की संख्या काफी कम कर दी है। शहरी व्यवस्था के अंतर्गत, जमीन के ज्यादा से ज्यादा हिस्से पर ऊंची-ऊंची इमारतें व मकान बन गए हैं। इंसानी बसावट को विस्तृत बनाने के लिए पेड़ों को काटना, उन्हें अन्य जगह बिना वैज्ञानिक पद्धति की मदद लिए स्थानांतरित करना, बिल्कुल उचित नहीं है। पेड़ शहरों के फेफड़े हैं और पानी को रोकने का अहम जरिया भी। अगर शहरों को सेहत भरी सांस और तरावट-भरी जिंदगी चाहिये तो पेड़ों की अहमियत को समझना होगा।

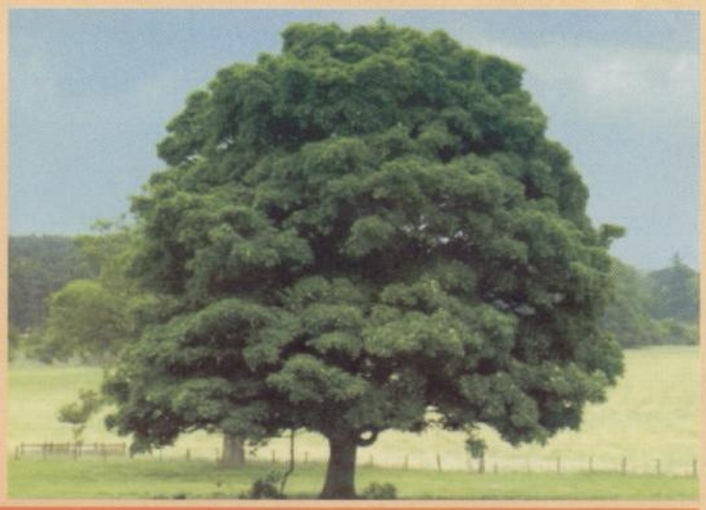

सम्पादकीय...

पर्यावरण की रक्षा

आम तौर पर लोगों की धारणा है कि पर्यावरण प्रदूषण केवल कल-कारखानों की जहरीली धुआं, कीटनाशी दवाओं के अंधाधुंध प्रयोग, जंगलों के विनाश, जनसंख्या में बेतहाशा वृद्धि आदि से होता है।

यह बात शायद ही लोगों के दिमाग में आती है कि पर्यावरण को प्रदूषित करने में घरों, दफ्तरों, स्कूल कॉलेजों, अस्पतालों, छोटे होटलों इत्यादि का भी बहुत बड़ा योगदान है, जहां आम आदमी अपना 85 से 90 प्रतिशत समय गुजारता है। गन्दगी यदि घर, दफ्तर, ढाबों और अस्पतालों में फैली हो तो पर्यावरण पर उसका प्रतिकूल प्रभाव पड़े बिना नहीं रह सकता है। 'इण्डोर इन्वायरमेंट प्रोग्राम' के तहत खोजबीन एवं जांच पड़ताल के बाद वैज्ञानिक इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि शहरों तथा नगरों में बाहरी खुली वायु की तुलना में घर के अन्दर की वायु में प्रदूषक तत्व कम नहीं होते हैं।

पर्यावरण की इस दुर्दशा के लिए हम सभी जिम्मेदार हैं। इसलिए इसे बेहतर बनाना भी हम सब का कर्त्तव्य है। पर्यावरण के संरक्षण हेतु ऐसे अनेक कारगर घरेलू उपाय हैं, जिन पर अमल करके निश्चय ही आने वाले कल के लिए हम पर्यावरण को बेहतर बना सकते हैं और आने वाली पीढ़ी को स्वच्छ पर्यावरण दे सकेंगे।

कूड़ा-करकट पर्यावरण को सबसे ज्यादा प्रदूषित करते है। इसलिए घर के अन्दर-बाहर तथा आसपास की सफाई को बहुत महत्व दिया जाना चाहिए। इसके लिए अनेक बातों पर अमल किया जाना जरूरी है ताकि हमारे आसपास स्वच्छता बनी रहे सकें। हरियाली का विस्तार और घरेलू कचरे का पूर्ण उपयोग भी इस दिशा में एक अच्छा कदम हो सकता है।

आवासीय क्षेत्रों को स्वच्छ रखना ना केवल स्वायतशासी निकायों की जिम्मेदारी है बल्कि इससे बढ़कर प्रत्येक नागरिक का राष्ट्रीय कर्तव्य भी है।

गांव में.....

□ ओम नागर 'अश्क'

गांव नहीं रहा अब
पहले जैसा
बदल गया है
बहुत कुछ...
अब पहले की तरह
सूरज की आहट के साथ
नहीं लेती औरतें
पनघट की राह
कंधे पर नहीं टंगी दिखती
कुंऐ से
पानी खेंचने वाली
रस्सियां/बगल में
मटकियाँ।

गांव में
अब नहीं पसरा रहता
सन्नाटा
देर रात तक
बजती रहती है
तरक्की की धुनें/टी.वी. के
विज्ञापनों के शोर
के रूप में
छानों को लांघती
सुनी जा सकती है
मोबाइल की
घंटिया।
मगर! कभी हुलस
उठती है
घासलेट की चिमनियां/
होती है जब लुकाछिपी
तारों में तैरती बिजली के साथ।

गांव में
अब नहीं रंभाते
पहले की तरह सुकून से
गाय, बछड़े
नहीं उड़ती दिखती
सांझ ढलने से पूर्व, दूर
गडारों से
घर की ओर लौटती
गाँव घेर की गर्द,
पशुपालन के नाम पर
शेष है अब
हर घर में
इक्की-दुक्की, दुधारू
गाय, भैसें
जो खूंटें बंधी चरती है
डिब्बा बंद सामग्री,
सुबह-शाम सहती है
दुग्ध वृद्धि के लिए
लगाई गई सुईयों के दर्द।

गांव में बुझ गये हैं अब
चौपालों पर देर तक
सर्दियों में जलते अलाव
राख के ढेर के नीचे
सदियों से पड़ी
दबी, चिंगारियां
कसमसाती है
ठीक ऐसे ही दबाये हुए
प्रेम की आंच को
नफरत की राख में
कसमसाता है प्रेम।

पत्र-परिपत्र

कार्यालय प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं मुख्य वन्य जीव प्रतिपालक, राजस्थान, जयपुर

क्रमांक : एफ3(200) तक-1/गणना/मुवजीप्र/2009/10387-462 दिनांक : 21.4.2009

निमित्त,

समस्त मुख्य वन संरक्षक.....

समस्त वन संरक्षक.....

समस्त उप वन संरक्षक.....

विषय : **बाघ/बघेरा एवं अन्य वन्य जीवों की गणना वर्ष -2009 के सम्बन्ध में**

सन्दर्भ : इस कार्यालय का पत्र संख्या 10221-296 दिनांक 6.4.2009

महोदय,

इस कार्यालय के सन्दर्भित पत्र से आपको राज्य में वन्य जीव गणना वर्ष - 2009 के लिये कार्यक्रम प्रेषित किया गया है।

बाघ/बघेरा एवं अन्य वन्य जीवों की गणना अब इस वर्ष माह मई 2009 में निम्नलिखित संशोधित कार्यक्रम अनुसार आयोजित की जानी है:-

(1) रणथम्भौर एवं सरिस्का टाईगर रिजर्व क्षेत्र :- कार्यक्रम

(i) ट्रांजेक्शन लाईन पर वन्य जीवों (चौपायों) की गणना	दि. 30.4.2009 से 4.5.2009 तक
(ii) वाटर होल गणना	दि. 09.5.2009 से 10.5.2009 तक (सायं. 5.00 बजे से) (सायं. 5.00 बजे तक)

(2) अन्य संरक्षित क्षेत्र :- कार्यक्रम

(i) ट्रांजेक्शन लाईन पर वन्य जीवों (चौपायों) की गणना	दि. 30.4.2009 से 4.5.2009 तक
(ii) वाटर होल गणना	दि. 09.5.2009 से 10.5.2009 तक (सायं. 5.00 बजे से) (सायं. 5.00 बजे तक)

(3) प्रादेशिक वन मण्डल एवं महत्वपूर्ण वन्य जीव बाहुल्य क्षेत्र :- कार्यक्रम

वाटर होल गणना	दि.09.5.2009 से 10.5.2009 तक (सायं. 5.00 बजे से) (सायं. 5.00 बजे तक)

शेष दिशा-निर्देश इस कार्यालय के सन्दर्भित पत्र के अनुसार ही रहेंगे।

भवदीय

ह.

प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं
मुख्य वन्य जीव प्रतिपालक
राजस्थान, जयपुर

कार्यालय प्रधान मुख्य वन संरक्षक, राजस्थान, जयपुर

क्रमांक : एफ.5 (5) 2008/विकास/प्रमुवसं/ 8481-540 दिनांक : 29-5-09

निमित्त,

समस्त मुख्य वन संरक्षक/वन संरक्षक

विषय : **अमृता देवी विश्नोई स्मृति पुरस्कार योजना वर्ष 2009**

महोदय,

श्रीमती अमृता देवी विश्नोई एवं उनके परिवारजनों द्वारा सिर कटाकर वृक्षों की रक्षा करने की घटना को अविस्मरणीय रखने हेतु एवं इस बलिदान की प्रणेता श्रीमती अमृता देवी विश्नोई की स्मृति में वनों एवं वन्य जीवों की सुरक्षा के लिए उत्कृष्ट/सर्वोच्च कार्य करने वाली वन सुरक्षा एवं प्रबन्ध समिति/ पंचायत/ग्राम स्तरीय संस्थायें/व्यक्तियों के लिए राज्य स्तरीय अमृता देवी विश्नोई स्मृति पुरस्कार प्रारम्भ किया गया है। इससे वन एवं वन्य जीवों की सुरक्षार्थ अच्छा कार्य करने वाले लोगों को राज्य स्तर पर पुरस्कृत करने से जनता में वन एवं वन्य-जीवों की सुरक्षा की भावना और अधिक प्रबल करने में मदद मिलेगी। इसके अन्तर्गत वन विकास, संरक्षण एवं वन सुरक्षा में उत्कृष्ट कार्य करने वाली वन सुरक्षा एवं प्रबन्ध समिति/पंचायत/ग्राम स्तरीय संस्थायें एवं व्यक्ति को क्रमशः 50,000 रुपये एवं 25,000 रुपये तथा वन्य-जीव संरक्षण में उत्कृष्ठ कार्य करने वाले व्यक्ति को 25,000 रुपये के पुरस्कार से राज्य स्तर पर पुरस्कृत किया जाना है।

जिला स्तर पर इन प्रस्तावों के चयन हेतु राज्य सरकार द्वारा जिला कलेक्टर की अध्यक्षता में एक समिति गठित की गई है जिसमें उप वन संरक्षक (प्रा.) को सदस्य बनाया गया है।

अतः आप दिनांक 25.08.2009 तक अपने क्षेत्र में वन सुरक्षा, वन विकास एवं वन्य जीव संरक्षण में अच्छा कार्य करने वाले व्यक्ति/वन सुरक्षा एवं प्रबन्ध समिति/पंचायत/ग्राम स्तरीय संस्थाओं के नामांकन कर जिला समिति के समक्ष प्रस्तुत कर दें ताकि जिला समिति इन प्रस्तावों का अनुमोदन कर प्रस्ताव राज्य सरकार/इस कार्यालय को भेज सके। नामांकन प्रक्रिया में इस कार्यालय के अ.शा. पत्र क्रमांक एफ. 5 (5) 94/आयो/ प्रमुवसं/ 6643-722 दिनांक 27.6.97 एवं पत्रांक 689 दिनांक 3.7.97 द्वारा प्रेषित दिशा-निर्देशों की पूर्ण पालना की जावे। आपके क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य कर रही वन सुरक्षा एवं प्रबन्ध समिति/पंचायत/ग्राम स्तरीय संस्थायें एवं निजी व्यक्तियों के ही नामांकन किये जावे। इन पुरस्कारों हेतु राजस्थान के प्रमुख दैनिक समाचार पत्रों में विज्ञप्ति प्रकाशित की जा रही है। आप अपने स्तर से भी जिला स्तर पर प्रचार करावें एवं योजना की पूर्ण सफलता में अपना व्यक्तिगत सहयोग प्रदान करें। राज्य स्तर पर नामांकन प्राप्त होने की अंतिम तिथि 30.09.2009 निर्धारित की गई है।

भवदीय

ह.

अति. प्रधान मुख्य वन संरक्षक
(विकास), राजस्थान, जयपुर

सोचना होगा....

जल, जंगल और जमीन के लिए

❑ डॉ. सूरज 'जिद्दी'

जल, जंगल और जमीन, इन तीन तत्वों के बिना प्रकृति अधूरी है। विश्व में सबसे समद्ध देश वही हुए हैं, जहाँ यह तीनों तत्व प्रचुर मात्रा में हों। हमारा देश जंगल एवं उसमें निवास करने वाले वन्य जीवों के लिए प्रसिद्ध है।

सम्पूर्ण विश्व में बड़े ही विचित्र तथा आकर्षक वन्यजीव पाए जाते हैं। हमारे देश में भी वन्य जीवों की विभिन्न और विचित्र प्रजातियां पाई जाती हैं। इन सभी वन्यजीवों के विषय में ज्ञान प्राप्त करना केवल कौतूहल की दृष्टि से ही आवश्यक नहीं हैं, वरन यह काफी मनोरंजक भी हैं।

भूमंडल पर सृष्टि की रचना कैसे हुई, सृष्टि का विकास कैसे हुआ और उस रचना में मनुष्य का क्या स्थान है? प्राचीन युग के अनेक भीमकाय जीवों का लोप क्यों हो गया और उस दृष्टि से क्या अनेक वर्तमान वन्य जीवों के लोप होने की कोई आशंका है?

मानव समाज और वन्य जीवों का पारस्परिक संबंध क्या है? यदि वन्य जीव भूमंडल पर न रहें, तो पर्यावरण पर तथा मनुष्य के आर्थिक विकास पर क्या प्रभाव पड़ेगा? तेजी से बढ़ती हुई आबादी की प्रतिक्रिया वन्य जीवों पर क्या हो सकती है आदि प्रश्न गहन चिंतन और अध्ययन के हैं।

इसलिए भारत के वन व वन्य जीवों के बारे में थोड़ी जानकारी आवश्यक है, एवं साथ ही यह जानना भी आवश्यक है कि सृष्टि-रचना चक्र में पर्यावरण का क्या महत्व है। पहले पेड़ हुए या गतिशील प्राणी? फिर सृष्टि-रचना की क्रिया में हर प्राणी, वनस्पति का एक निर्धारित स्थान रहा है। इस सृष्टि-रचना में मनुष्य का आविर्भाव कब हुआ? प्रकृति के इस चक्र में विभिन्न जीव-जंतुओं में क्या कोई समानता है? वैज्ञानिक दृष्टि से उसको कैसे समझा जाए, जिससे हमें पता चले कि आखिर किसी प्रजाति के लुप्त हो जाने से मानव समाज और पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ सकता है, क्योंकि आखिर हम भी एक प्रजाति ही हैं।

आज हमें सबसे ज्यादा जरूरत है पर्यावरण संकट के मुद्दे परआम जनता और सुधी पाठकों को जागरूक करने की।

जीव-जंतुओं एवं जंगल का विषय है तो बड़ा 'क्लिष्ठ' पर है उतना ही रोचक। इसे समझने के लिए सबसे पहले खुद पर पड़ रहे पर्यावरण के प्रभाव को जानना आवश्यक है।

दिनोंदिन गम्भीर रूप लेती इस समस्या के निपटने के लिए आज आवश्यकता है एक ऐसे अभियान की, जिसमें हम सब स्वप्रेरणा से सक्रिय भागीदारी निभाएँ। इसमें हर कोई नेतृत्व करेगा, क्योंकि जिस पर्यावरण के लिए यह अभियान है उस पर सबका समान अधिकार है।

तो आइए हम सब मिलकर इस अभियान में अपने आप को जोड़ें। इसके लिए आपको कहीं जाने या किसी रैली में भाग लेने की जरूरत नहीं, केवल अपने आस-पड़ोस के पर्यावरण का अपने घर जैसा ख्याल रखें जैसे कि-

घर के आसपास पौधारोपण करें। इससे आप गरमी, भूक्षरण, धूल इत्यादि से बचाव तो कर ही सकते हैं, पक्षियों को बसेरा भी दे सकते हैं, फूल वाले पौधों से आप अनेक कीट-पतंगों को आश्रय व भोजन दे सकते हैं।

बंदर, गाय, कुत्ते आदि के प्रति सहानुभूति रखें व आवश्यकता पड़ने पर दाना-पानी या चारा उपलब्ध कराएँ। मगर यह ध्यान रहे कि ऐसा उनसे सम्पर्क में आए बिना करना अच्छा रहेगा, क्योंकि अगर उन्हें मनुष्य की संगत की आदत पड़ गई तो आगे चलकर उनके लिए घातक हो सकती है।

पर्यावरण पर बड़ी-बड़ी बातें करने से पहले हमें कुछ आदतें अपनाना होंगी व उनका पालन करना होगा, क्योंकि स्थितियां बदलने की सबसे अच्छी शुरूआत स्वयं से होती है।

अनुरोध :

वानिकी समाचार में प्रकाशनार्थ आलेख, छायाचित्र, विभागीय गतिविधियों की जानकारी, साझा वन प्रबन्ध की सफल कहानियां, कविताएं तथा अन्य सामग्री प्रकाशनार्थ आमंत्रित हैं। यह सामग्री ई-मेल से भी भेजी जा सकती है। इस पत्रिका के अंक वेबसाइट पर भी उपलब्ध हैं।

- सम्पादक

Book-Post

वन विभाग, राजस्थान के लिए उप वन संरक्षक, वानिकी प्रशिक्षण संस्थान, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर द्वारा प्रकाशित एवं प्रिन्ट 'ओ' लैण्ड, जयपुर से मुद्रित। 2009/3000
संरक्षक : अभिजीत घोष; संपादक : यू.एम. सहाय; सहायक सम्पादक : सूरज जिद्दी Website : www.rajforest.nic.in • E-mail : vanikisamachar@yahoo.co.in